

"तो मैं क्या करूँ"

नहीं आसमान यह जिंदगी

नहीं उलता-जलता सूरज

आशा मन का फंसा जीना।

पर करूँ कैसे संभव...

उम्मीदें नई लाले सूरज।

इच्छा ही रह जाऊ आसमान
को चुना!...

मग़र हाथ न होता कोविश
करने वाले की।

सुलना देने वाले सपनों से
जागकर

देखों सपने जो करवाते मेहनत

जब करेगी कोविश सुलाने की

कठड़ी हवा कमरे की।

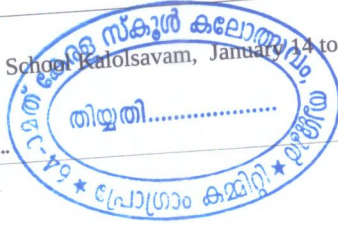
गर्मे हवा और नरम हवा

जो आती खिड़की से

समेझती बालों और जगती।



Item Code: 641



Participant Code: 036

जींदियाँ डालती कीटनाहओं को

और बड़ी आग

मजित कि तरफ ।

पेटले ज़ाबती जिंदियों को

खाना मिलती ।

शेवानी देना आपनों को

कुछ जलकर ।

कल का हात बूझकर

फूलों के तरह दृशना ।

आपने अन्धकार से

सबको आवश्यक करना ।

डरना नहीं खा जाने पर

अंधेरे में ।

हैं चाँद - चाँदनी चमक

के सान ।

बस काभी है एक दिशा

अंधेरे में शेवानी कीतर ।

ताईं दृशने - खेलाते

सबके शान्ती बनते ।

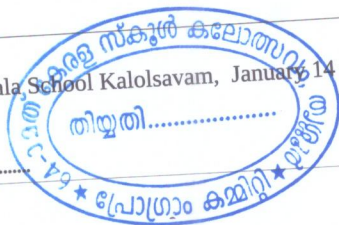
शांत आसमान का भी ।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).



Item Code: 641

Participant Code: 036



हूँगे पेहन फिर बूँगे
आगे तैश्कर
है जिंदगी यही।

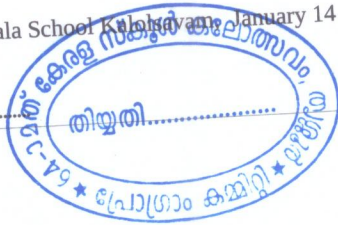
एक अमान सफर जो
सुद के शत सुद का है।
बिना जाने कल का हाल...!
नहीं संभव
मानना सबको अपना, और
पालना करना सारे प्रकृतिक
नियम।

चाहियें फूल हजारों बनाने कीलम माना।
चाहियें रंग हजारों बनाने कीलम रंगोली।
चाहियें दीप हजारों बनाने कीलम आरती।
चाहियें मन एक बदलाने कीलम
लागों को।

नहीं आसान यह जिंदगी
जन्म लेते और जीते
स्वतंत्रता से।
पर है वीक्षित नियमों से।
हम बनसाने।



Item Code: 641



Participant Code: 036

बस बनसान है हम
येदमत करो, वद मत करो
फठते शान हमारे,
है हम सभी वंजित
नियमों से।

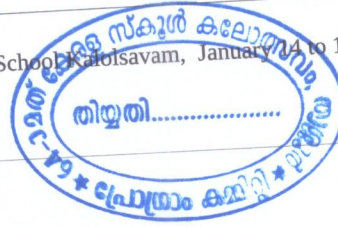
पूँकर गिरना हर बार
होले कदम है विजय
की ओर के।

तो मैं करूँ तो क्या करूँ ?
वंजित होना सभी से
और करना फिर फला सभी का
फला करो तो फला हो
करे बात इंसान की
फला करो तो बुरा हो।

बड़े ऊँचे पेड़
न देखते छाया को
देखते सूरज को।
करी खास-छोरी उसकी
नकल हो बैठी जब।



Item Code: 641



Participant Code: 036

जब पृथ्वी में सभी
करते दूसरों की फला
दंशान सोचते अपने
बाँह में,

फूल और कहीं नीचे काल का
हाल भूलकर हमारे लिए दशते हैं।
मगर हम सोचते उन्हें हमारे
काल के लिए।

मानते हम पेड़ को
ईश्वर का तरदान।

जब चीनते इसका

जान भूल जाते तरदान को भी।

कैर चोड़ें

जो भी हो देखा जायेगा।

इनसान ऐसे ही है।

यह जिंदगी न तो

आसान है।

और मैं अकिर में

कया करूँ ?

नही आ रहा समझ में।